1. रज्जुयोग

यदि लग्न चर राशि में हो एंव कई ग्रह चर राशि में हो तो रज्जुयोग होता हैं।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक ज्यादातर महत्वकांक्षी, नाम और यश के लिए जगह जगह घूमने वाले, यात्रा प्रेमी, शीघ्र निर्णय लेने वाले एंव खुले विचारों के होते हैं। यह जातक अस्थिर मन, अनिर्णय, अविश्वसनीय तथा किसी एक कार्य में लगे रहने में असमर्थ होते हैं। वह लगातार संघर्ष में रहते हैं फिर भी कोई स्थिर सम्मपत्ति बनाने में असफल रहते हैं।

2. संख्या पाश योग

सभी ग्रह जब पाँच भावों में हो तो पाश योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक विशाल परिवार वाले, कार्य में दक्ष, धन संग्रह करने में निपुन, चलाक, दुष्ट स्वभाव, वन में निवास करने कि इच्छा रखने वाले व कई त्रुटियाँ वाले होते हैं।

3. उत्तमदि (अधम) योग

सूर्य से केन्द्र (1, 4, 7, 10) में चन्द्रमा हो तो अधम योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक धन, ज्ञान, कुशलता व यश सामान्य रूप से ही प्राप्त कर पाते हैं तथा इनके फल अल्प मात्रा में ही भोगते हैं।

4. वेशि योग

चन्द्रमा के अतिरिक्त दूसरा कोई भी ग्रह सूर्य से द्वितीय स्थान में हो तो वेशि योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक लम्बे, ईमानदार, आलसी, दानी, सत्यवादी, अच्छी स्मरण शक्ति के तथा सामान्यतया धनी होते हैं।

5. वेशि योग (शुभ)

चन्द्रमा के अतिरिक्त दूसरा कोई भी शुभ ग्रह सूर्य से द्वितीय स्थान में हो तो वेशि शुभ योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक वार्ता में चतुर, धनवान तथा अपने विरोधियों पर विजय प्राप्त करने वाले हाते हैं।

6. वेशि योग (शुक्र)

सूर्य से द्वितीय स्थान में शुक्र हो तो वेशि (शुक्र) योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक माननीय, विख्यात, निड़र तथा अच्छे चरित्र के होते हैं।

7. उभयचर योग

चन्द्रमा के अतिरिक्त दूसरा कोई भी ग्रह सूर्य से द्वितीय एवं द्वादश स्थान में हो तो उभयचर योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक बलवान, जिम्मेदार, विद्वान, आकर्षक व्यक्तित्व तथा भौतिक सुख ऐश्वर्यो का सुख प्राप्त करते हैं।

8. अमला कीर्तियोग

लग्न से दशम स्थान में शुभ ग्रह स्थित हो तो यह योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक माननीय, दानशील, दयावान, परोपकरी तथा शारीरिक सुख व भोग प्राप्त करते हैं।

9. दुरयोग

दशमेश की स्थिति 6ठे, 8ठे या 12वें भाव में हो।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक दूसरों को अपनी ओर आकर्षित करने में असमर्थ, छल व कपटी, मित व्ययी व ईर्षावान तथा अधिकतर अपने निवास स्थान से दूर रहने वाले होते हैं।

10. दरिद्र योग

ग्यारहवें स्थान के स्वामी की स्थिति 6ठे, 8ठे या 12वें भाव में हो।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक अकसर भारी कर्जदार, कान में रोग से पीड़ित, दुष्ट स्वभाव, बर्ताव में रूखापन तथा दुश्चरित्र कार्यों में लीन रहने वाले होते हैं।

11. धन योग

लग्नेश का सम्बन्ध द्वतीयेश, पंचमेश, नवमेश या फिर एकयदेश से हो।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक धन तथा ऐश्वर्य से युक्त होते हैं।

12. कर्मजीव योग

लग्न या फिर चन्द्रमा से 10वें स्थान में शुक्र हो तो कर्मजीव योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक व्यवसाय के रूप में अधिकतर रत्नों, गाय व आदि भेड़ों तथा सौदंर्य तथा अलंकरण आदि की वस्तुओं से सम्बन्धित कार्य का व्यापार करते हैं। इस योग के पुरुष, स्त्री द्वारा भी आजीविका प्राप्त कर सकते हैं।

13. कर्मजीव योग

लग्न, चन्द्रमा या फिर सूर्य से 10वें स्थान में शनि हो तो कर्मजीव योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातकों का व्यवसाय अधिकतर शारीरिक परिश्रम से युक्त होने की सम्भावना है। यह जातक परिश्रम एवं संघर्षमय कार्य जैसे बोज उठाने एवं अन्य छोटे कार्य, कर्मचारी आदि सम्बन्धित कार्य कर सकते हैं।

14. कर्मजीव योग

लग्न, चन्द्रमा या फिर सूर्य से 10वें स्थान में शनि की युति या दृष्टि हो तो कर्मजीव योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातकों का व्यवसाय अधिकतर शारीरिक परिश्रम से युक्त होने की सम्भावना है। यह जातक परिश्रम एवं संघर्षमय कार्य जैसे बोज उठाने एवं अन्य छोटे कार्य, कर्मचारी आदि सम्बन्धित कार्य कर सकते हैं।

15. शरीर सौख्य योग

लग्नेश, गुरु या शुक्र केन्द्र में स्थित हो तो शरीर सौख्य योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक दीर्घायु, धनवान तथा राजनैतिक क्षेत्र में अच्छा प्रभाव रखने वाले होते हैं।

16. देह कष्ट योग

लग्नेश की युति किसी अशुभ ग्रह से हो या फिर उसकी स्थिति अष्टम भाव में हो तो देह कष्ट योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक अधिकतर सांसारिक सुख से वांछित रहते हैं।

17. कृशाग्ड योग

इस योग में जन्म लेने वाले जातक शारीरिक गठन में कुछ पतले एवं कमजोर तथा शारीरिक कष्ट भोगते हैं।

18. सुमुख योग

द्वितीयेश, केन्द्र में हो एवं शुभ ग्रह की दृष्टि हो या फिर शुभ ग्रह की स्थिति द्वितीय भाव में हो तो सुमुख योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक आकर्षक व्यक्तित्व के, दिखने में सुन्दर तथा सुखी होते हैं।

19. काल निर्देशित पुत्रनाश योग

गुरु व लग्न से 5वें स्थान में अशुभ ग्रह हो तो काल निर्देशित पुत्रनाश योग बनता है।

20. सत्कलत्र योग

सप्तमेश या शुक्र से गुरु या बुध की युति या दृष्टि हो सत्कलत्र योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक स्वच्छ हृदय तथा मर्यादित जीवनसाथी से युक्त होते हैं।

21. अरिष्ट योग

लब्नेश की युति या दृष्टि षष्ठेश, अष्टमेश या द्वादेश से हो तो अरिष्ट योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक जीवन में शारीरिक अस्वस्थता से पीड़ित रहते हैं।

22. अरिष्ट योग

षष्ठेश की युति या दृष्टि अष्टमेश या द्वादेश से हो तो अरिष्ट योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक जीवन में शारीरिक अस्वस्थता से पीड़ित रहते हैं।

23. अरिष्ट योग

अष्टमेश की युति या दृष्टि द्वादेश से हो तो अरिष्ट योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक जीवन में शारीरिक अस्वस्थता से पीड़ित रहते हैं।

24. दरिद्र योग

एकादेश की स्थिति छठे, अष्टम या द्वादश भाव में।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक भारी कर्जदार, पराधीन, सुनने में तकलीफ, उग्र स्वभाव तथा दुष्चरित्र कार्य में लीन रहते हैं।

25. योगारिष्ट (योगज आयु) योग

लग्नेश व अष्टमेश पाप ग्रह हों तथा द्वादश एवं छठे भाव में गुरु न हो।

26. वत्त रोग योग

5, 9 या 7वें भाव में मंगल हो तो वत्त रोग योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक घबराहट, बेचैनी, अपाचन, नीन्द न आना तथा शरीर में पानी की कमी से पीड़ित हो सकते हैं

27. जीवादोश योग

बुध षष्ठेश हो तो जीवादोश योग बनता है।

28. सूर्य बुध योग

सूर्य एवं बुध की युति एक ही भाव में हो तो सूर्य बुध योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक मधुर भाषी, चतुर, विद्वान, सच्चे, धनी, हर कार्य में निपुण तथा प्रतिष्ठत होते हैं।

29. मंगल गुरु योग

मंगल एवं गुरु की युति एक ही भाव में हो तो मंगल गुरु योग बनता है।

इस योग में जन्म लेने वाले जातक विद्वान, विख्यात, चतुर, शस्त्र में निपुन, शिल्पकार तथा अच्छी स्मरण शक्ति से युक्त होते हैं।